मेरे संग की औरतें (मृदुला गर्ग)

पाठ का सारांश

मृदुला गर्ग द्वारा रचित 'मेरे संग की औरतें' नामक पाठ में लेखिका ने अपने संपर्क में आई घर की औरतों के बारे में बताया है। ये औरतें उसकी बहनें, माँ, दादी, परदादी, नानी आदि हैं। इन सभी के स्वभाव और व्यक्तित्व का लेखिका ने यहाँ वर्णन किया है।

नानी और आज़ादी के प्रति उनकी लगन–लेखिका की एक नानी थीं; जिन्हें लेखिका ने कभी देखा न था। लेखिका की नानी एक पारंपरिक, अनपढ़ तथा परदा करने वाली औरत थीं। उनके पति यानी लेखिका के नाना जी शादी के तुरंत बाद उन्हें छोड़कर बैरिस्ट्री पढ़ने विलायत चले गए थे। कैंब्रिज विश्वविद्यालय से जब वे डिग्री लेकर लौटे और विलायती ढंग से ज़िंदगी व्यतीत करने लगे तो नानी के अपने रहन-सहन पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। पर जब कम उम्र में ही नानी ने स्वयं को मौत के निकट पाया, तब उन्होंने अपनी पंद्रह वर्षीया पुत्री (लेखिका की माँ) की शादी का ज़िम्मा नाना के मित्र स्वतंत्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा को सौंप दिया। नानी अपनी बेटी की शादी किसी आज़ादी के सिपाही से करना चाहती थीं। इससे नानी की आज़ादी के प्रति लगन का पता चलता है।

सादा जीवन जीने को विवश माँ–लेखिका की माँ की शादी ऐसे होनहार पढ़े-लिखे लड़के से हुई, जिसे आज़ादी के आंदोलन में भाग लेने के अपराध में आई०सी०एस० के इंम्तिहान में बैठने से रोक दिया गया था। उनकी ज़ेब में पुश्तैनी पैसा-धेला एक नहीं था। माँ; बेचारी अपनी माँ और गांधी जी के सिद्धांतों के चक्कर में सादा जीवन जीने पर मजबूर हुईं। माँ को खादी की भारी साड़ी पहननी पड़ती थी। दुबली-पतली माँ के लिए इसे पहनना बड़ा भारी काम था। घर में ससुर का दबदबा था। पिता खाली ज़ेब थे। माँ बहुत खूबसूरत थीं। उनकी इसी खूबसूरती, नज़ाकत, ईमानदारी तथा निष्पक्षता से सभी प्रभावित थे।

कर्म-विरत, किंतु श्रद्धालु माँ–लेखिका ने अपनी माँ को कभी भारतीय माँ जैसा नहीं पाया। न उन्होंने कभी लेखिका को लाड़ किया, न खाना पकाया और न अच्छी पत्नी-बहू होने की सीख दी। कुछ अपनी बीमारी के चलते भी वे घर-बार नहीं सँभाल पाती थीं, पर उसमें ज़्यादा हाथ उनकी अरुचि का था। उनका ज़्यादा वक्त किताबें पढ़ने में बीतता था, बाकी वक्त साहित्य-चर्चा में या संगीत सुनने में और वे यह सब बिस्तर पर लेटे-लेटे किया करती थीं। ससुराल के अन्य सदस्य उन्हें न नाम धरते थे, न उनसे आम औरत की तरह होने की अपेक्षा रखते थे। उनमें सबकी इतनी श्रद्धा क्यों थी, जबकि वह पत्नी, माँ और बहू के किसी प्रचारित कर्तव्य का पालन नहीं करती थीं? साहबी खानदान के रोब के अलावा लेखिका की समझ में इसके दो कारण आए– (1) वे कभी झूठ नहीं बोलती थीं। (2) वे एक की गोपनीय बात को दूसरे पर प्रकट नहीं होने देती थीं।

लीक से बाहर चलने वाली भक्तिन परदादी–लेखिका के घर में एक **परदादी** भी थीं। उन्हें लीक से बाहर चलने का शौक था। उन्होंने मंदिर में जाकर यह मन्नत माँगी कि उनकी पतोहू का पहला बच्चा लड़की हो। उनका ऐलान सुनकर लोगों के मुँह खुले-के-खुले रह गए। वे अपनी मन्नत दुहराती रहीं। पूरा गाँव जानता था कि उनके तार भगवान के साथ जुड़े हुए हैं। भगवान ने भी उनकी ऐसी सुनी कि एक न दो, पूरी पाँच कन्याएँ घर में भेज दीं।

चोर को भी किसान बनाने वाली परदादी–एक बार की बात है। घर के मर्द बरात में बाहर गए हुए थे। घर की औरतें सज-धजकर रतजगा मना रही थीं। माँ जी शोर से बचने के लिए एक अन्य कमरे में जाकर सो गईं। तभी एक चोर सेंध लगाकर उसी कमरे में घुस आया। माँ जी की नींद खुल गई। उन्होंने उससे एक लोटा पानी लाने को कहा। चोर ने कहा भी कि मैं तो चोर हूँ, किंतु वे उससे पानी पिलाने के लिए हठ करने लगीं। माँ जी ने आधा लोटा पानी स्वयं पिया और आधा चोर को पिला दिया और कहा कि अब हम माँ-बेटे हुए। अब तू चाहे चोरी कर या खेती कर। चोर बेचारा चोरी छोड़कर खेती करने लगा।

ब्रदर्स कारामजोव का लेखिका पर प्रभाव–15 अगस्त, 1947 को जब देश को आज़ादी मिली या कहना चाहिए, जब आज़ादी पाने का जश्न मनाया गया तो दुर्योग से लेखिका बीमार थी। उन दिनों टाइफ़ॉइड खासा जानलेवा रोग माना जाता था, इसलिए लेखिका के तमाम रोने-धोने के बावजूद डॉक्टर ने उसे इंडिया गेट जाकर जश्न में शिरकत करने की इजाज़त नहीं दी। चूँकि डॉक्टर अपने नाना के परम मित्र, उनसे ज़्यादा नाना थे, इसलिए लेखिका के पिता जी, जो बात-बात पर सत्ताधारियों से लड़ते-भिड़ते फिरते थे, चुप्पी साध गए। लेखिका रोती-कलपती रही, क्या कोई बच्चा इकलौती गुड़िया के टूट जाने पर रोया होगा! लेखिका की उम्र तब नौ बरस की थी। रोने से तंग आकर पिता जी ने लेखिका को 'ब्रदर्स कारामजोव' उपन्यास पकड़ा दिया। किताबें पढ़ने का लेखिका को जुनून था। सो, जब कुछ देर बाद लेखिका ने देखा कि पिता जी को छोड़कर घर के बाकी सब प्राणी पलायन कर चुके थे और पिता जी दूसरे कमरे में बैठे अपनी किताब पढ़ रहे थे तो रोना-धोना छोड़कर लेखिका ने भी किताब खोल ली। एक बार शुरू कर लेने पर उसने लेखिका को इतनी मोहलत नहीं दी कि दोबारा रोना शुरू करे या कोई और काम करे। उस वक्त 'ब्रदर्स कारामजोव' लेखिका को देने में क्या तुक थी, तब लेखिका की समझ में नहीं आया। किताब कितनी समझ में आई, वह अब तक नहीं

जानती; क्योंकि उसके बाद इतनी बार पढ़ी कि सारे पाठ आपस में गड्ड-मड्ड हो गए। कितना पहली बार में पल्ले पड़ा, कितना बाद में, कहना मुश्किल है। पर लेखिका इतना विश्वास के साथ कहती है कि उसका एक अध्याय, जो बच्चों पर होने वाले अनाचार-अत्याचार पर था, उसे पहली बार में ही लगभग कंठस्थ हो गया था। उम्र के हर पड़ाव पर वह लेखिका के साथ रहा और लेखन के एक महत्त्वपूर्ण भाग को प्रभावित करता रहा; जैसे–लेखिका का 'जादू का कालीन' नाटक, 'नहीं' व 'तीन किलो की छोरी' जैसी कहानियाँ व 'कठगुलाब' उपन्यास के कई अंश।

लेखिका की लेखिका बहनें–लेखिका और उसकी चार बहनें कभी किसी हीनभावना का शिकार नहीं हुईं। लेखिका की बड़ी बहन का घर का नाम रानी था, पर बाहर का नाम **मंजुल भगत** था। वह भी लेखिका बन गई। दूसरे नंबर पर लेखिका स्वयं थी। उसका घर का नाम उमा था और बाहर का **मृदुला गर्ग**। लेखिका से छोटी बहन का घर का नाम गोरी और बाहर का **चित्रा** था। वह नहीं लिखती थीं। फिर **रेणु** और **अचला** थीं। भाई का नाम **राजीव** है। अचला **अंग्रेज़ी** में लिखती है और राजीव हिंदी में। रेणु का स्वभाव बड़ा विचित्र था। वह स्कूल से वापसी के समय गाड़ी में बैठने से इनकार कर देती थी। उसकी दृष्टि में थोड़ा-सा रास्ता गाड़ी में बैठकर तय करना सामंतशाही का प्रतीक था। वह पसीने से तरबतर पैदल चलकर आती थी। बचपन में एक बार उसने जनरल थिमैया को पत्र लिखकर उनका चित्र मँगवा लिया था। चित्र एक सैनिक आकर दे गया था। इससे उसका पड़ोस में काफी हल्ला बढ़ गया था।

जिद्दी लेखिका–चित्रा की पढ़ने में रुचि नहीं है। सबसे छोटी **अचला** ने पत्रकारिता की पढ़ाई की है और पिता की पसंद से विवाह किया। वह भी लिखती है। शादी के बाद लेखिका डालमिया नगर (बिहार का एक छोटा कस्बा) में रही। बाद में बागलकोट (कर्नाटक) पहुँच गई। वहाँ उसने एक स्कूल खोला, जो सफल रहा। लेखिका का स्वभाव जिद्दी था, जिसका वर्णन उसने पाठ के अंत में किया है।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए*–

प्रश्न 1 : लेखिका ने अपनी नानी के बारे में क्या बताया है?

उत्तर : लेखिका की एक नानी थीं, परंतु लेखिका ने उन्हें कभी देखा नहीं था। लेखिका की माँ की शादी होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी। शायद नानी से कहानी न सुन पाने के कारण बाद में लेखिका और उनकी तीन बहनों को खुद कहानियाँ कहनी पड़ीं। नानी से कहानी भले ही न सुनी हो, परंतु नानी की कहानी ज़रूर सुनी और बहुत बाद में जाकर उसका असली मर्म समझ में आया। लेखिका ने इतना ही जाना कि उनकी नानी, पारंपरिक, अनपढ़, परदा करने वाली औरत थीं, जिनके पति शादी के तुरंत बाद उन्हें छोड़कर बैरिस्ट्री पढ़ने विदेश चले गए। कैंब्रिज विश्वविद्यालय से डिग्री लेकर जब वे लौटे और विलायती रीति-रिवाज़ के संग ज़िंदगी व्यतीत करने लगे, तो नानी के अपने रहन-सहन पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। उन्होंने कभी भी अपनी किसी इच्छा-आकांक्षा या पसंद-नापसंद का प्रकटीकरण पति पर नहीं किया।

प्रश्न 2 : नानी जी स्वतंत्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा से क्यों मिलना चाहती थीं?

उत्तर : जब कम उम्र में नानी ने स्वयं को मृत्यु-शय्या पर पाया तो अपनी पंद्रह वर्षीय इकलौती बेटी (लेखिका की माँ) की शादी की चिंता ने उन्हें इतना डराया कि वे एकदम मुखर हो उठीं। नाना से उन्होंने कहा कि वे परदे का लिहाज़ छोड़कर उनके दोस्त स्वतंत्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा से मिलना चाहती हैं। इस बात को सुनकर सब दंग रह गए। जिस परदा करने वाली औरत ने पराए मर्द से क्या, खुद अपने मर्द से मुँह खोलकर कभी बात नहीं की थी, वह आखिरी समय में किसी अजनबी से क्या कहना चाह रही होगी? लेखिका के नाना ने वक्त की कमी और मौके की नज़ाकत को समझा। सवाल-जवाब में वक्त बरबाद करने की बजाए वे तत्काल जाकर अपने दोस्त को बुला लाए और नानी के सामने ला खड़ा किया।
अब जो नानी ने कहा, वह और भी आश्चर्यजनक था। नानी ने कहा, **''वचन दीजिए कि मेरी लड़की के लिए वर आप तय करेंगे। मेरे पति तो साहब हैं और मैं नहीं चाहती मेरी बेटी की शादी, साहबों के फ़रमाबरदार से हो। आप अपनी तरह आज़ादी का सिपाही ढूँढ़कर उसकी शादी करवा दीजिएगा।''**

प्रश्न 3 : लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं, फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थीं?

उत्तर : लेखिका की नानी का निधन लेखिका की माँ की शादी होने से पहले ही हो गया था; अतः लेखिका द्वारा उन्हें देखे जाने का प्रश्न ही नहीं उठता था; लेकिन लेखिका ने नानी के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। उसी सुने हुए वृत्तांत के आधार पर लेखिका नानी के व्यक्तित्व से प्रभावित हो गई थीं। नानी अनपढ़ होते हुए भी अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व रखती थीं। उनके मन में अंग्रेज़ों के पिट्ठू बने लोगों के स्थान पर आज़ादी के लिए काम करने वालों के लिए सम्मान की भावना थी। वे अपने मन में देश की स्वतंत्रता के लिए एक जुनून रखती थीं। वे अपने निजी जीवन में भी स्वतंत्र विचारों की थीं।

प्रश्न 4 : लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?

उत्तर : लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी भले ही न रही हो, परंतु वे हृदय से उसमें सम्मिलित थीं। उन्होंने अपने पति के मित्र प्यारेलाल शर्मा को अपना विश्वासपात्र बनाया, जो स्वतंत्रता-सेनानी थे। नानी ने शर्मा जी से अपनी बेटी के लिए ऐसा वर खोजने का आग्रह किया, जो आज़ादी का सिपाही हो। लेखिका की नानी के मन में आज़ादी का जुनून था।

प्रश्न 5 : लेखिका की माँ की वे विशेषताएँ बताइए, जिनके कारण वे सभी के दिलों पर राज करती थीं।

उत्तर : लेखिका की माँ की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–

(i) वे बहुत आकर्षक व्यक्तित्व की महिला थीं।
(ii) वे अत्यंत कोमल प्रकृति की थीं।
(iii) उनकी ईमानदारी, निष्पक्षता एवं सच्चाई सभी को प्रभावित करती थी।
(iv) उनकी सलाह का सभी सम्मान करते थे।
(v) वे किसी की गोपनीय बातों को दूसरों के सामने प्रकट नहीं करती थीं।

प्रश्न 6 : लेखिका की दादी के घर के माहौल का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

उत्तर : लेखिका की दादी के घर का माहौल पक्का साहबी था। परिवार के लोग केवल जन्म के हिंदुस्तानी थे, बाकी ठाठ-बाट, दिखावट-बनावट, संस्कार और पढ़ाई-लिखाई में वे सभी शुद्ध अंग्रेज़ थे। इन सबमें भी लेखिका की माँ के ससुर सबसे अधिक साहबी मिज़ाज के थे और घर में उन्हीं का दबदबा था। घर में काम करने के लिए नौकर-चाकर थे। लेखिका की माँ अपने बच्चों की देख-भाल स्वयं नहीं करती थीं। घर में सबको अपनी तरह से जीवन जीने की आज़ादी थी। कोई एक-दूसरे के निजी जीवन में दखल नहीं देता था। यहाँ तक कि एक-दूसरे की चिट्ठियाँ भी नहीं पढ़ते थे।

प्रश्न 7 : आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी?

उत्तर : परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत इसलिए माँगी होगी; क्योंकि वे लीक से हटकर चलती थीं, जबकि भारतीय समाज में परंपरा रही है कि प्रथम संतान के रूप में पुत्र ही माँगा जाता है। प्रथम संतान के रूप में लड़की माँगने के पीछे यह भी कारण रहा होगा कि परदादी के मन में लड़कियों के प्रति विशेष स्नेहभाव रहा हो।

प्रश्न 8 : डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है–पाठ के आधार पर तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : इस बात को सिद्ध करने के लिए पाठ में आई नामी चोर की घटना का उल्लेख किया जा सकता है। एक बार लेखिका के घर में एक नामी चोर घुस आया। उस समय घर में कोई पुरुष नहीं था। चोर परदादी के कमरे में पहुँच गया। परदादी ने उसे अपनी बातों में सहजता से इस प्रकार फँसाया कि वह उनका बेटा बन गया और चोरी छोड़कर उसी घर में खेती के काम में लग गया। इससे स्पष्ट है कि डराने, धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है।

प्रश्न 9 : 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'–इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : लेखिका यह स्वीकार करती थी कि शिक्षा बच्चों के लिए अनिवार्य है। लेखिका जब बागलकोट (कर्नाटक का एक छोटा कस्बा) पहुँच गई, तब वहाँ कोई ढंग का विद्यालय न था। लेखिका ने कैथोलिक बिशप से विद्यालय खोलने की प्रार्थना की, परंतु वे तैयार न हुए। अंततः लेखिका ने स्वयं स्कूल खोला और उसे कर्नाटक सरकार से मान्यता भी दिलवाई।

प्रश्न 10 : पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इनसानों को अधिक श्रद्धाभाव से देखा जाता है?

उत्तर : पाठ का अध्ययन करने पर पता चलता है कि निम्नलिखित इनसानों को श्रद्धा-भाव से देखा जाता है–

(i) जो सदैव सत्य के मार्ग पर चलते हों।
(ii) जो किसी की गोपनीय बातें अन्य को न बताते हों।
(iii) जो अपने इरादों में सुदृढ़ हों।
(iv) जो अन्य लोगों के साथ सहज व्यवहार करते हों।
(v) जो किसी भी हीनभावना से ग्रस्त न हों।

पाठ में लेखिका की माँ इसका उदाहरण है। यद्यपि वे घर का कोई दायित्व नहीं निभाती थीं, लेकिन इन उपर्युक्त गुणों के कारण सब लोग उनमें श्रद्धा-भाव रखते थे और उसका सम्मान करते थे।

प्रश्न 11 : 'सच, अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है'–इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर : इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन और लेखिका के विषय में पता चलता है कि वे जिद्दी स्वभाव की थीं और अपने निजी जीवन में किसी का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करती थीं। वे अपने विचारों के अनुसार चलने वाली महिला थीं। लेखिका की बहन रेणु को मूसलाधार वर्षा में घर के सब लोगों ने स्कूल जाने से मना किया, लेकिन वह नहीं मानी; क्योंकि उसकी इच्छा स्कूल जाने की थी। वह घुटनों तक पानी से भरी दिल्ली की सुनसान सड़कों से पैदल, अकेली स्कूल गई और वापस आई; क्योंकि स्कूल बंद था। इसी प्रकार जब कैथोलिक बिशप ने लेखिका की नया स्कूल खोलने की प्रार्थना अस्वीकार कर दी, तो लेखिका ने क्षेत्रीय लोगों के साथ मिलकर स्वयं एक स्कूल खोला और उसे अच्छी प्रकार चलाया भी। इस प्रकार उन्हें अकेले काम करने में आनंद का अनुभव होता था।

प्रश्न 12 : 15 अगस्त के जश्न में लेखिका क्यों न जा सकीं?

उत्तर : 15 अगस्त, 1947 ई० को जब देश को स्वतंत्रता मिली या कहना चाहिए, जब आज़ादी पाने का जश्न मनाया गया तो दुर्भाग्य से लेखिका बीमार थी। उन दिनों टाइफ़ॉइड बहुत अधिक जानलेवा रोग माना जाता था, इसलिए लेखिका के तमाम रोने-धोने के बावजूद डॉक्टर ने लेखिका को इंडिया गेट जाकर जश्न में भाग लेने की इजाज़त नहीं दी। चूँकि डॉक्टर नाना के परम मित्र थे, इसलिए उनसे ज़्यादा नाना थे, यही कारण था कि पिताजी ने लेखिका को जश्न में जाने न दिया।

प्रश्न 13 : शादी के पश्चात् लेखिका कहाँ रही? उसे वहाँ क्या अनुभव हुआ?

उत्तर : शादी के पश्चात् लेखिका बिहार के एक छोटे कस्बे (डालमिया नगर) में रहीं, जहाँ स्त्री-पुरुष, चाहे वे पति-पत्नी ही क्यों न हों, सिनेमा देखने जाते, तो लोग अलग-अलग कक्षों में बैठते। लेखिका दिल्ली से कॉलेज़ की नौकरी छोड़कर वहाँ पहुँची थी और नाटक खेलने की शौकीन रही थी। लेखिका ने उनके चलन के सामने हार न मानी। एक वर्ष की अवधि में उन्होंने विवाहित महिलाओं को पराए मर्दों के साथ नाटक करने के लिए तैयार कर लिया। आगामी चार वर्षों तक उन्होंने कई नाटक किए। अकाल राहत कोष के लिए भी लेखिका ने नाटकों से धन एकत्र किया।

प्रश्न 14 : 'भारतीय माँ' से लेखिका का क्या आशय है?

उत्तर : 'भारतीय माँ' से लेखिका का आशय उस माँ से है, जो भारतीय परंपरा का निर्वाह करते हुए अपने बच्चों, घर-परिवार और पति की देख-रेख में तन-मन से समर्पित हो। वह अपने बच्चों को लाड़-लड़ाए, उनके लिए अच्छी तरह से खाना पकाए। अपनी बेटियों को अच्छी पत्नी-बहू होने की सीख दे।

प्रश्न 15 : लेखिका ने अपनी माँ और नानी को 'लीक से खिसके' कहा, मगर दादी पर ऐसी कोई टिप्पणी नहीं की, क्यों? इस पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर : लेखिका ने अपनी माँ और नानी को 'लीक से खिसके' पूर्वज कहा, मगर अपनी दादी पर ऐसी कोई टिप्पणी नहीं की; क्योंकि उनकी दादी सबके साथ सामंजस्य बैठाकर चलने वाली महिला थीं। उन्होंने अपनी बहू अर्थात् लेखिका की माँ के पारिवारिक दायित्वों से विमुख होने पर उन्होंने उसे ताने नहीं दिए और न ही किसी दूसरे को देने दिए। अगर कोई माँ के घरेलू काम न करने पर कोई टिप्पणी करता भी था, तो वे उससे कहतीं–"हम हाथी पे हल ना जुतवाया करते, हम पे बैल हैं।" परिवार के बच्चों की ममतालू परवरिश में वे परिवार के सभी सदस्यों को मुस्तैद रखती थीं और स्वयं भी इसके प्रति जागरूक रहती थीं।

प्रश्न 16 : लेखिका और उनकी बहनों में कौन-सी एक बात थी, जो समान थी?

उत्तर : मृदुला गर्ग और उनकी बहनों में एक बात समान थी और वह बात यह थी कि उन सभी ने अपने घर-बार को परंपरागत तरीके से भले न चलाया हो, उसे तोड़ा भी नहीं, शादी एक बार की और उसे कायम रखा। चाहे तलाक के कगार पर खड़ी हो, पर कगार तोड़, डूबी नहीं। वे सभी इस बात पर विश्वास करती रहीं कि मर्द बदलने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। घर के भीतर रहते हुए भी, अपनी मर्ज़ी से जी लो तो काफ़ी है।

प्रश्न 17 : लेखिका ने पाठ में अपने संग की कितनी औरतों का उल्लेख किया है? आपको उनमें से किसका चरित्र प्रभावित करता है?

उत्तर : लेखिका ने पाठ में नानी, परदादी, दादी, माँ, अपनी बड़ी बहन मंजुल भगत, छोटी बहनों–गौरी (दूसरा नाम चित्रा), रेणु और अचला का उल्लेख किया है। हमें लेखिका की दादी के चरित्र ने प्रभावित किया है; क्योंकि उन्होंने अपने दायित्वों को न निभाने वाली लेखिका की माँ के साथ कभी कलह नहीं किया। उन्होंने अपने घर का माहौल ऐसा बनाकर रखा, जिसमें लेखिका और उसके बहन-भाइयों की अच्छी परवरिश हुई। लेखिका की माँ के दायित्वों को भी उन्होंने स्वयं निभाया।

प्रश्न 18 : 'मेरे संग की औरतें' कहानी में वर्णित लेखिका की नानी तथा नाना की परस्पर मत विभिन्नता कभी दांपत्य-जीवन में बाधक नहीं बनी, जो समाज के हर व्यक्ति के लिए किस तरह एक अनुपम उदाहरण प्रतीत होती है? आप इससे क्या प्रेरणा ग्रहण करते हैं?

उत्तर : लेखिका की नानी एक पारंपरिक, अनपढ़ भारतीय महिला थीं। उनका विवाह विलायत से पढ़कर लौटे और अंग्रेज़ों की तरह ज़िंदगी जीने वाले व्यक्ति के साथ हुआ। उसकी जीवन-शैली का लेखिका की नानी के जीवन पर कोई असर नहीं पड़ा। दोनों के विचार भिन्न थे। इस बात का उनके दांपत्य-जीवन पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा। नानी अपने निजी जीवन में आज़ाद-ख्याल की थीं। उन्होंने अपना जीवन अपने तरीके से जिया और अपने पति के निजी जीवन में कभी दख़ल नहीं दिया।

आज के समाज में अधिकांश पति-पत्नियों के विचार भिन्न-भिन्न होते हैं और उनकी मत-विभिन्नता उनके बीच दीवार बन जाती है। यह भिन्नता इतनी अधिक बढ़ जाती है कि उनमें तलाक यानी विवाह-विच्छेद की नौबत आ जाती है। समाज के ऐसे व्यक्तियों के लिए लेखिका के नानी-नाना का दांपत्य जीवन एक अनुपम उदाहरण है, जिससे सभी को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। अपने-अपने विचार के अनुसार जीवन जीने की स्वतंत्रता हो, लेकिन साथ ही सामाजिक संबंधों को दायित्वपूर्ण ढंग से निभाने की कर्तव्य भावना भी आवश्यक है। तभी सामाजिक ताने-बाने की रक्षा एवं सामाजिक समरसता संभव है।

प्रश्न 19 : मृदुला गर्ग ने कहा कि उनके घर की महिलाएँ लीक से हटकर चलने वाली थीं, क्या आप इस कथन से सहमत हैं? आप इस पाठ में वर्णित किस महिला के आचार-विचार से प्रेरणा ग्रहण करते हैं और उनके किस गुण के कारण?

उत्तर : 'मेरे संग की औरतें' कहानी की लेखिका मृदुला गर्ग का यह कहना बिलकुल उचित है कि उनके घर की महिलाएँ लीक से हटकर चलने वाली थीं। चाहे माँ हों या बहनें, नानी हों या दादी सभी की जीवन-शैली सामान्य होकर भी विशिष्ट थी। इन सभी औरतों के विचार स्वतंत्र एवं स्वाभिमानी किस्म के थे। सभी अपने-अपने गृहस्थ जीवन को सामान्य ढंग से जीते हुए भी अन्य महिलाओं से काफ़ी भिन्न थी। सभी का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व था और सभी अपने-अपने विचारों पर काफ़ी दृढ़ रहती थीं।

लेखिका की परदादी का चरित्र सबसे अधिक प्रभावित करने वाला है। उनके आचार-विचार न केवल अन्य महिलाओं से पर्याप्त भिन्न थे, बल्कि वे अपने समय से बहुत आगे बढ़े हुए भी थे। लेखिका की परदादी ने यह व्रत ले रखा था अगर उनके पास कभी भी दो से ज़्यादा धोतियाँ होंगी, तो वे तीसरी दान कर देंगी। उनके अपरिग्रह संबंधी विचार आज भी लोगों के लिए अत्यधिक प्रेरक हैं। उन्होंने पितृसत्तात्मक समाज में रहते हुए भी अपने घर में अपनी पतोहू की लड़की होने की कामना की। उन्होंने भगवान से मन्नत माँगी कि उनकी पतोहू का पहला बच्चा लड़की हो। यह विचार अपने समय की रूढ़ियों को न केवल तोड़ने वाला था, बल्कि यह अपने समय की तुलना में काफ़ी आधुनिक एवं प्रगतिशील भी था। इन्हीं कारणों से लेखिका की परदादी का चरित्र अधिक प्रभावित करता है।

प्रश्न 20 : 'हमने अपनी माँ को कभी भारतीय माँ जैसा नहीं पाया।' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर : लेखिका की माँ ने अपने बच्चों से कभी लाड़ नहीं किया। बच्चों के लिए कभी खाना नहीं पकाया और न अच्छी पत्नी या बहू बनने की शिक्षा दी। बीमार रहने के कारण वे घरबार नहीं सँभाल पाती थीं। उन्हें इन सब कामों में रुचि भी न थी। वे अपना अधिक समय किताबें पढ़ने में व्यतीत करती थीं, बचा हुआ समय साहित्य चर्चा में या संगीत सुनने में व्यतीत होता था। इसके विपरीत भारतीय समाज में भारतीय माँ ही अपने बच्चों का पालन-पोषण करती हैं। उनके लिए खाना बनाती हैं, पढ़ाई का ध्यान रखती हैं तथा अच्छी पत्नी-बहू बनने की सीख देती हैं। लेखिका की माँ अपने बच्चों के लिए ऐसा कुछ नहीं करती थीं। इन्हीं कारणों से लेखिका ने अपनी माँ को कभी भारतीय माँ जैसा नहीं पाया।

प्रश्न 21 : 'मेरे संग की औरतें' पाठ में रेणु कौन थी? उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : रेणु लेखिका की चौथे नंबर वाली बहन थीं। वे सामंतशाही ढंग से रहने एवं सोचने के खिलाफ़ थीं। गरमी की दोपहरी में स्कूल से उन्हें लेने गाड़ी जाती, तो छोटी बहन अचला उसमें बैठ जातीं, पर रेणु बैठने से मना कर देतीं। एक बार चुनौती दिए जाने पर उन्होंने जनरल थिमैया को भी पत्र लिखकर उनका चित्र मँगवा लिया था। वे बी०ए० की परीक्षा देने के लिए भी तैयार नहीं थीं। उनका तर्क था कि उनके लिए बी०ए० पास करना जरूरी क्यों है? यदि उन्हें यकीन हो जाएगा कि बी०ए० पास करने से कोई लाभ है, तभी वह परीक्षा देंगी। किसी का भी तर्क उन्हें संतुष्ट न कर पाया। अंत में पिताजी ने उन्हें ज़ोर देकर कहा कि बी०ए० पास करो। रेणु ने केवल अपने पिता की खुशी के लिए बी०ए० पास की। इसीलिए वे केवल पास होने लायक नंबर ही लाईं। वे सदा सच बोलती थीं तथा हँसमुख स्वभाव वाली थीं।

प्रश्न 22 : लेखिका मृदुला गर्ग ने अपने तीसरे नंबर वाली बहन चित्रा के विषय में क्या बताया?

उत्तर : लेखिका मृदुला गर्ग ने अपनी तीसरे नंबर वाली बहन के बारे में बताया कि जब चित्रा कॉलेज पढ़ने जातीं, तो वे स्वयं की पढ़ाई पर कम ध्यान देतीं। उन्हें अपने से ज़्यादा दूसरों को पढ़ाने का शौक था। इसलिए उनके अंक कम तथा उनके शिष्यों के अंक ज़्यादा आते थे। शादी के समय एक नज़र में लड़के को पसंद करके उन्होंने ऐलान कर दिया वे शादी करेंगी, तो उससे ही।

वे अत्यंत दृढ़-निश्चयी स्वभाव की थीं। उन्होंने मुलाकात में ही लड़के को बता दिया था कि जो वह सोच लेती हैं, वह होकर ही रहता है। दृढ़-निश्चयी और एक हद तक ज़िद्दी स्वभाव कई बार जीवन के लिए अत्यंत मददगार तथा उपयोगी होता है। यह किसी के व्यक्तित्व को अन्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व से अलग भी कर देता है।

प्रश्न 23 : व्यक्ति अपनी मृत्यु के निकट पहुँचने पर अपनी दबी हुई इच्छा को व्यक्त कर देता है। लेखिका की नानी के व्यवहार के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर : नानी ने जब स्वयं को मौत के निकट पाया, तब वह अपनी बेटी अर्थात् लेखिका की माँ की शादी के विषय में सोचकर व्याकुल हो उठीं और परदा त्यागकर अपने पति के एक मित्र स्वतंत्रता सेनानी प्यारेलाल शर्मा को बुलाया। उन्होंने उनसे कहा कि वे ही उनकी बेटी के लिए ऐसा वर तय करें, जो आज़ादी का सिपाही हो। इससे उनके अंदर छिपे आज़ादी के जुनून और आज़ाद खयालों का पता चलता है। सारी उम्र अपने ढंग से जीवन जीने वाली स्त्री, लेखिका की नानी, के व्यवहार में आया यह परिवर्तन अप्रत्याशित था।

प्रश्न 24 : हमारे समाज में आज भी अधिकतर लोग संतान के रूप में बेटे की कामना रखते हैं, ऐसे में पुराने जमाने की होते हुए भी लेखिका की परदादी का पतोहू के बच्चे के रूप में लड़की की मन्नत माँगना क्या सिद्ध करता है?

उत्तर : लेखिका की परदादी उच्च आदर्शों वाली तथा लीक से अलग हटकर चलने वाली महिला थीं। उस समय समाज-सुधार तथा स्त्री उत्थान के आंदोलनों के प्रचार-प्रसार के चलते गाँव-शहर हर जगह नई चेतना का विकास हो रहा था, जिनसे प्रेरणा पाकर कुछ ऐसी पारंपरिक और रूढ़िवादी महिलाओं की सोच में परिवर्तन आया कि सब अचंभित (हैरान) हो गए।

ऐसी ही महिला थीं, लेखिका की परदादी, उन्होंने भगवान से अपनी पतोहू के पहले बच्चे के लिए लड़की होने की मन्नत माँगी और इस मन्नत की घोषणा सरेआम की। उनका अपनी पतोहू के पहले बच्चे के रूप में लड़की की मन्नत माँगना यह सिद्ध करता है कि उनकी निगाह में स्त्रियों का स्थान अत्यंत ऊँचा था।

प्रश्न 25 : 'मेरे संग की औरतें' पाठ के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर : 'मेरे संग की औरतें' एक नए ढंग या शैली में लिखा गया संस्मरणात्मक गद्य है। यह पाठ ऐसी औरतों पर केंद्रित है, जिन्होंने परंपरागत तरीके से जीवन जिया, लेकिन साथ ही ये लीक से हटकर जीने की भी प्रेरणा देती हैं। पाठ में लेखिका की नानी, परदादी, माँ, बहनें और स्वयं लेखिका की कहानी बताई गई है। ये सभी चरित्र वस्तुतः लेखिका के संग की ही महिलाएँ हैं। लेखिका इस शीर्षक के माध्यम से किन्हीं विशिष्ट स्त्रियों के बारे में उनके विशिष्ट व्यक्तित्व की चर्चा करने का लक्ष्य नहीं रखती, बल्कि सामान्य स्त्रियों के व्यक्तित्व में निहित विशिष्ट गुणों को उभारना चाहती हैं। इसलिए वह अपने संग की सामान्य महिलाओं की ही चर्चा करती हैं। इसलिए 'मेरे संग की औरतें' शीर्षक पूर्णतः सार्थक और अत्यंत प्रभावी है।